© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

प्रो राजेन्द्र मिश्र प्रणीत 'अप्रकाशित संस्कृत शतक : एक समीक्षा

डॉ मधु शुक्ला
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

प्रो0 अभिराज राजेन्द्र–प्रणीत उन शतकों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया जा रहा है जो अप्रकाशित हैं तथा तीन कोटियों में विभक्त हैं। उदाहरणार्थ–

1. प्रकाशनाधीन– शतकपंचदशी

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली (Deemed University) द्वारा प्रकाशित किये जा रहे इस शतक–संग्रह में कुल पन्द्रह कृतियाँ संकलित हैं। इनके नाम हैं– वियोगव्याहारशतक, उपालभ्भशतक, संकटमोचनशतक, विवेकानन्दशतक, नवरत्नसमीक्षाशतक, प्रमाणिका– शतक, अयोध्याशतक, रूद्राक्षशतक, त्रिपुराशतक, निमिपालशतक, अनुभूतिशतक, कस्माच्छतक, वरदेश्वरशतक, शनिशतक, कविसहस्रनामशतक तथा ऋषिसहस्रनामशतक।

2. पत्र–पत्रिका में प्रकाशित शतक–

दोघकशतक, श्रीशतक, विद्युन्मालाशतक, हरगौरीगंगाशतक, शिवभारतशतक, बालीविलासशतक, रूद्राक्षशतक।

3. सर्वथा अप्रकाशित शतक–

अभिराजशतक, स्पेनयात्राशतक, चौरशतकम् तथा अधमाधमशतकम्।

वियोगव्याहारशतकम् को हम शोकगीत अथवा मार्सिया (उर्दू) कह सकते हैं। इसमें दिवंगत अग्रज डॉ0 देवेन्द्र मिश्र (1992ई0) जन्मदात्री जननी महीयसी अभिराजीदेवी (सन् 1996ई0) तथा अनुजरत्न आचार्य सुरेन्द्र मिश्र (सन् 2008 ई0) अपने इन तीन प्रियजनों के बिछोह से उत्पन्न कवि का विलापस्वर मुखरित हुआ है। कवि अपने भाइयों तथा माँ के उपकारों का स्मरण कर, उनकी मधुर स्मृतियों की पुनरावृत्ति कर अपने दुर्भाग्य को कोसता है, निष्करूण विधाता को उलाहना देता है तथा अगले जन्मों में भी उन्हीं से जुड़ने की कामना व्यक्त करता है।

कवि के अग्रज डॉ0 देवेन्द्र मिश्र तंत्रमंत्र–पारग भविष्यद्रष्टा दैवज्ञ तथा माँ दुर्गा के महान् उपासक थे। उन्होंने अपनी मृत्यु–तिथि स्वयं घोषित कर दी थी– सांकेतिक रूप से। वह विद्यालय में अध्यापन–हेतु जा रहे थे। नाव से नदी पार करती थीं। परन्तु तभी कुछ उत्पाती गुण्डों के कलह से नाव अस्थिर होकर डूबने लगी। उसी अफरा–तफरी में घर की कुछ बच्चियों को बचाने के प्रयास में उनकी धोती नाव के कील में फँस गई और वह देखते ही देखते सई नदी की जल–समाधि में लीन हो गए।

जननी अभिराजी यद्यपि 85 वर्ष की अवस्था में, पुत्रों–पौत्रों का सारा सुख–अभ्युदय देखकर दिवंगत हुई। परन्तु वह ज्येष्ठ पुत्र के शोक में ही डूबी रहीं। अनुज सुरेन्द्र जी बाल ब्रह्मचारी, निष्ठावान् रामभक्त एवं ऊर्ध्वरेता तपस्वी थे। उन्होंने भी विद्यालय की सेवानिवृत्ति से पूर्व ही असार संसार को छोड़ा।

कवि को अपने प्राणसरीखे बन्धुजनों तथा जन्मदात्री का यह घातक वियोग झेलना पड़ा। अपनी नियति मानकर उसने सारे शोक स्वीकार किये। इस शतक की करुण अभिव्यक्तियाँ पाठक को रोने के लिए बाध्य कर देती हैं जब कवि कहता है–

पयोगर्भे मग्नः कतिपयनिमेषावधियुतां
व्यथां मृत्योः सोढ्वाऽमरपुरसुखं त्वं कलयसि।
वयं तिष्ठन्तोऽपि प्रथितपुलिने किन्तु सरितो

विना त्वां सद्बन्धो! मरणशरणाः प्राणविमुखाः।।
गतोऽग्रजः प्राक्तमनुब्रजन्ती गता प्रसूश्चापि हि तन्मनस्का।
मदन्धयष्टिर्ननु सोऽपि यातोऽनुजो विधे! सम्प्रति किं करोमि।।

उपालम्भशतकम् – वक्रोक्तिपद्धति से लिखा गया काव्य है जिसमें कवि ने भगवती पराम्बा को अपनी विपत्तियों में शिथिल एवं तटस्थ रहने के लिये उलाहना दिया है। **उपालम्भ उसी को दिया जाता है जो समर्थ होते हुए भी असमर्थता प्रदर्शित करता है।** कवि ने अपने जीवन की एक–एक घटना का स्मरण कराकर माँ से कहा है कि वह चाहतीं तो पुत्र का त्राण कर सकती थीं। कवि कहता है कि यदि भाग्य–लिपि ही सब कुछ है तो फिर दैवी कृपा का महत्त्व ही क्या?

कविरस्मि ततो वच्मि स्वलेखं जातु टङ्कितम्।
अयुक्तप्रशुभं यद्वा मृष्यामि स्वयमात्मना।
तत्त्वं विधे! न कस्मान्मे भाग्यलेखं सकृत्कृतम्।
मृद्नासि कुटिलं मत्वाऽकुटिलं वाऽथ मन्यसे।।

संकटमोचनशतक भी भगवान् आंजनेय को सम्बोधित काव्याभिव्यक्तियों का संकलन है। अकारणवैरियों के दुष्कृत्यों से विद्ध तथा सतत पीछा करती विपदाओं से कातर कवि भगवान् पवनपुत्र की ही शरण में जाता है। वहीं है कलियुग के प्रत्यक्षदेवता, जो सब कुछ करने में समर्थ हैं। कवि गुहार लगाता है सहायता के लिए!

संकटे कं नु साहाय्यं कर्तुमावाह्यान्यहम्।
मन्त्रयते मनोऽभीक्ष्णं बन्धुं संकटमोचनम्।।
अनन्तशयनस्सुप्तो गाढनिद्रोहरिः पुनः।
क्षुभ्यदिभ्ः सिन्धुकल्लोलैरकालेबधिरीकृतः।।
न कालहरणं क्षम्यं विलम्बं सोढुमक्षमः।
मृत्युपाथोधिकूलेऽहं दैवगत्याऽस्मि जर्जरः।।
रक्षरक्षाऽञ्जनेय त्वं रक्ष मां मारुते प्रभो!
ग्रहीतुं देव सन्नद्धो मणिबन्धं प्रसारय!!

विवेकानन्दशतकम् की रचना, स्वामी विवेकानन्द के आविर्भाव के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर की गई है। इसमें स्वामी विवेकानन्द का शैशव भी चित्रित है तथा उनका उत्तरोत्तर अध्यात्म की ओर उन्मुख होता जीवन भी। कवि ने बड़े मनोयोग से स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदान्त (Practical Vedant) को समझाया है। विवेकानन्द का भावी संन्यास उनके शैशव में ही प्रकट होने लगा था उनके विलक्षण व्यवहारों से। कवि कहता है–

प्रायशोऽसौ समाधिस्थः स्वपरज्ञानवंचितः।
सम्मुखीनं न वा वेद कृष्णसर्पं बृहत्फणम्।।
साहसिको महानासीन्निर्भयोऽसौ शिशुः खलु।
प्राणनपि पणीकृत्य संकटस्थान् न्यवारयत्।।
कतिधा नाऽन्यरक्षार्थं नरेन्द्रः क्षतविक्षतः।
स्वयं जातः कारुणिको निसर्गादेव वत्सलः।।

–विवेक0 65–67

नवरत्नसमीक्षाशतक एक अधिक्षेपात्मक (Satirical Poem) शतक है जिसमें समाज को अस्थिर, अव्यवस्थित तथा कलंकित करने वाले नवरत्नों (?) की चरित्र–समीक्षा की गई है। ये नौ रत्न हैं– निन्दक, कृतघ्न, अकारणवैरी, द्वेषी, लम्पट, असत्यवक्ता आदि। सदा–सदा से ये समाज को असन्तुलित एवं आतंकित करते रहे हैं।

इन्हीं चरित्रहीन दुर्जनों के कारण भारत राष्ट्र पतन के गर्त में जा गिरा है। पूरे समाज में इन्हीं का बहुमत है, इन्हीं का प्रभुत्व तथा वर्चस्व है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ये बहुरूपिये आपको मिलेंगे। ये नेता भी हैं, मंत्री भी हैं, डॉक्टर भी हैं, वकील भी हैं, सन्त भी हैं और अध्यापक भी हैं। इनका दो रूप होता है– एक व्यावहारिक तथा दूसरा पारमार्थिक। व्यवहारतः ये आपको भव्य वेश में मिलेंगे कालनेमि की तरह। परन्तु मूलतः हैं ये दानव!

कवि ने बड़े साहस तथा निर्भयता के साथ इन नौ रत्नों की पहचान की है। वह कहता है–

अकारणाविष्कृतवैरदारूणान्

स बाणभट्टोऽपि कवीन्दुशेखरः।
ध्रुवं ववन्दे युतपाणिरानतः
न कस्य तस्माद् भयमाशु जायते!!
ततो ऽभिराजोऽपि तदीयवंशजो
निरन्तरं तान् भजते स्तवोत्तमैः।
यतस्त एते विधिभालपट्टिका–
मपि क्षमा वर्तयितुं सदाऽन्यथा।।

प्रमाणिकाशतक राष्ट्रिय भावनाओं से ओत–प्रोत पद्यों का संकलन है जिनकी रचना कवि ने **प्रमाणिका छन्द** में की है। प्रमाणिका के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं– जगण, रगण, लघु–गुरु (प्रमाणिका जरौ लगौ) के क्रम में। इस छन्द में विलक्षण प्रवाह होता है। छन्दों के पारखी प्रो0 मिश्र ने भारत राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों को इसी छन्द में व्यक्त किया है।

न दृश्यतेऽद्यबन्धुता न मित्रता कृतज्ञता
प्रतार्यकार्यसिद्धिता महीयते कृतघ्नता।
विशीर्य सत्पटं घटं विभिद्य रासभेऽप्यहो
निषद्य कीर्तिलब्धये जना मतिं प्रकुर्वते।
न सत्पथेन गम्यते न वित्तमर्ज्यते नयैः
न चिन्त्यतेऽद्य केनचिच्छिवं न सत्यसुन्दरम्।
न तातमातृनिष्ठया महीयते तदात्मजः
महीयते स केवलं स्ववल्लभानुरंजनैः।।–प्रमा0 9–12
इयं हि भारती धरा चिरन्तनी सनातनी
समस्तविश्वभूमितो गरीयसी महीयसी।
यदीयधूलिषु प्रभुः स्वयं जगन्नियंत्रकः
विलुण्ठ्य संस्खलश्चंकार शैशवेषु नर्तनम्।।–प्रमा0 98, 99

अयोध्याशतकम् का प्रेरणास्रोत है– **बाबरी मस्जिद का विध्वंस**। कवि ने इस शतक में पूर्ण निर्भयता, प्रामाणिकता तथा बेबाकी के साथ इस्लाम धर्म की असहिष्णुता तथा धर्माडम्बर का विवेचन किया है। उसने धर्म के पारमार्थिक लक्षण की तुला पर भी इस्लाम की समीक्षा की है तथा मुस्लिम महिलाओं की दीन–हीन, उपेक्षित दशा का भी चित्रण किया है। हिन्दू अथवा वैदिक धर्म की उदारता, सहिष्णुता तथा सर्वोदय–भाव का प्रमाण देते हुए कवि ने अयोध्या में मस्जिद–विध्वंस का खुल कर समर्थन किया है तथा इस्लाम मतानुयायियों को, नवयुगीन चेतना का हवाला देते हुए, आत्मपरिवर्तन का सन्देश दिया है।

इस शतक में कुल 160 पद्य है जो सामान्यतः अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध हैं। कवि ने बड़ी निर्भयता के साथ इस्लाम की समीक्षा की है–

यदि खड्गबलेनैव स्वधर्मस्थापना मता।
यदि वा रक्तपातैश्च सम्भवेद् विश्वमंगलम्।।
स्त्रियः कामोपभोगार्थं लम्पटानां यदीप्सिताः।
धर्मदेशनया हन्त चतस्रस्ता रतिम्भराः।।
मुद्राभिः शक्यते क्रेतुं शीलंच यदि योषिताम्।।
इस्लामो भूतले तर्हि वर्धतां वर्धतां चिरम्।।
कुराणपाठतल्लीना मुहम्मदाऽनुयायिनः।
बन्धवः! प्रार्थ्यते प्रीत्या पठन्तु लिखितं नु किम्!!

–अयोध्या0 15–18

रूद्राक्षशतक वस्तुतः **लद्दाखशतक** हैं। इस शतक में कवि ले लद्दाखवासी बौद्धों के साथ किये जाते काश्मीरी मुस्लिम युवकों के अनाचार का वर्णन किया है। ये युवक नौकरी के बहाने लद्दाख जाते हैं, बौद्धों के घर में किरायेदार बनते हैं तथा उनकी भोली–भाली कन्याओं को प्रेमजाल में फँसाकर, **स्वयं को हिन्दू बताकर**, विवाह कर

लेते हैं। परन्तु काश्मीर लौटने पर वे ऐसी गुमनामी में डूबते हैं कि कन्या के माता–पिता उन्हें ढूँढते ही रह जाते हैं। ऐसी सैकड़ों कन्याओं का कोई अता–पता ठिकाना नहीं।

कवि कल्पना करता है कि लद्दाख, लद्दाख ही नहीं रूद्राक्ष भी है– **प्रलयंकर शिव की तीसरी आँख।** वह इन मुस्लिम युवकों का सारा पापाचार देख रहा है। कहीं वह भी काम की तरह अपने ही पाप की आग में भस्म न हो जायँ?

लवजेहादनाम्नी सा भैरवीं स्थितिमागता।
समग्रं भारतं वर्षं सन्तापयति दारुणा।।
अहो नु प्रेमसम्बन्धे विवाहे चापि वंचना।
गोपनं हन्त सत्यस्य कीदृशीयं पिशाचता।।
रूद्र! रक्ष स्वरूद्राक्षं राक्षसानामुपद्रवात्।
तृतीयं लोचनं नाथ समुद्घाटय सत्वरम्।

त्रिपुराशतकम् कवि की अगरतला–यात्रा पर आधारित परिचयपरक काव्य है। यहाँ के सिद्धपीठ त्रिपुरेश्वरी का वर्णन करते हुए कवि ने निरीह छाग–बलि का लोभहर्षक वर्णन किया है जिसे पढ़कर मन शोकसन्तप्त हो उठता है। द्रष्टव्य है–

छागरज़्जुग्रहोन्मत्तान् स्वार्थलुब्धान् विलोक्य मे।
शापस्सहसा वदनान्निर्गतो वेदनोद्भवः।।
मूढ़ा लुब्धा नृशंसा भो ध्वंसतां ते मनोरथः।
रक्तं निपाय्य यद् धात्रीं स्वार्थपूर्तिं प्रपश्यथ!!

–त्रिपुरा0 62, 63

निमिपालशतक भी कवि की नेपालयात्रा (1994) का प्रत्यक्ष वर्णन है। इस यात्रा में कवि की **जन्मदात्री महीयसी अभिराजी देवी** भी पुत्र के साथ थी। कवि ने भगवान् पशुपतिनाथ, वाङ्मती नदी तथा काठमाण्डू का रोचक वर्णन किया है।

उस समय नेपाल–नरेश वीरेन्द्रशाह जीवित थे। उन्होंने कवि का अभिनन्दन किया था। नेपाल में जीवन्त हिन्दू धर्म का वर्णन करते हुए कवि, वहाँ की भारतीय संस्कृति का चित्रण करता है।

नूनं नेपालदेशोऽयं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
त्रिविष्टपप्रवेशार्थं निर्मितं परमेष्ठिना।।
यत्र नारायणी पूता कौशिकी वाङ्मती शुभा।
वहन्त्यो भारतं क्षेत्रं प्रपुनन्ति जलोच्चयैः।।
भारतप्रहरी सोऽयं हिन्दुधर्माभिभावकः।
मिथिलांचलभूतोऽयं नेपालो जयतेतराम्।।

अनुभूतिशतकम् एक चिन्तनपरक काव्य है जिसमें रचनाकार के तीते–मीठे सांसारिक अनुभवों का संकलन है। इसमें कुल 105 पद्य हैं। ये अनुभूतियाँ वैयक्तिक होती हुई भी सार्वजनिक हैं, क्योंकि कवि तो समूचे ब्रह्माण्ड का प्रतिनिधि होता है। वह चेतन तो चेतन, अचेतनों के भी हृदय–गह्वर में प्रविष्ट होने की क्षमता रखता है। वह निर्वाक् को भी वाणी दे देने में समर्थ है। प्रो0 मिश्र इस कला के धुरीण कवि हैं। अपनी एक गजल में उन्होंने साँपों की कथा भी उजागर की है–

नो गृहे वा वने तन्निवासो मतः
जीवनं यापयेयुः भुजंगाः कथम्!!

कस्माच्छतकम् काव्य में कवि ने आपाततः अनुचित तथा विस्मयावह प्रतीत होने वाले तथ्यों पर प्रश्न उठाया है। वस्तुतः ये प्रश्न सृष्टिकर्ता विधाता के प्रति हैं। यद्यपि हम जानते हैं कि सांसारिक विपर्ययों के मूल में है प्राणी का कर्म–विपाक। तथापि ये रोचक प्रश्न मन में गुदगुदी पैदा करते हैं जब कवि पूछता है–

कस्मात्स्वाण्डं पिकी मूढा जनयित्वाऽन्यनीडके।
निदधाति श्रयद्धौर्त्या किमज्ञा नीडनिर्मितौ!!
कस्माद्रात्रौ न फुल्लन्ति पंकजानि सरोवरे!

तेषां कृते किमाग्नेयं तेजश्चन्द्रस्य जायते!!
कस्मात्पुत्रेष्टियागान्ते जाताः पुत्राः प्रजापतेः।
चत्वार एव कस्माच्च नैक एव रघूत्तमः।।–कस्मा0 5–7

वरदेश्वरशतकम् में भिवानी (हरियाणा) में स्थापित **वरदेश्वर शिवलिंग** से जुड़ी कवि की यात्रा तथा प्राणप्रतिष्ठा–महोत्सव का चित्रण है। इस यात्रा में कवि के साथ उसके अन्यान्य मित्रगण भी गए थे। वरदेश्वर समारोह के विविध कार्यक्रमों का भावभीना वर्णन इस काव्य में उपलब्ध है। यथा–

ममाग्रजेन कविना रमाकान्तेन धीमता।
राजेन्द्रेण मया चापि संकल्प उररीकृतः।।
गृहीत एव संकल्पे ततो रूद्राभिषेचनम्।
समर्चकैः समारब्धं यजुर्वेदात्मकं शुभम्।।
यावत्प्रभातमेवं हि रूद्राभिषेक उत्सवः।
प्राचलन्नितरां रम्यो वरदेश्वरसन्निधौ।।

शनिशतकम् 107 छन्द में प्रणीत शतककाव्य है। इसमें क्रूर ग्रह शनि के स्वरूप, प्रभाव, उपासना, अनुकूलता–प्रतिकूलता तथा शनिधाम का रोचक वर्णन है। कवि शनि की कृपा की कामना करते हुए कहता है–

इदं प्रभो! मामकनिर्बलत्वं समीक्षमाणोऽपि यदि प्रतुष्टः।
भवान्न मय्येति सदाऽनुकूल्यं ध्रुवं निमङ्क्ष्यामि विपत्पयोधौ।।
अवेक्षितं श्रीपतिवत्सलत्वं श्रियश्च पुत्राभ्युदयेहितत्वम्।
शने! न रोषात्तव रक्षिता कोऽप्यतस्त्वमेवाऽव निजैकरक्ष्यम्।
स आशुतोषोऽपि सुरासुरार्च्यः क्षमोऽन्यथात्वेऽपि लिपेर्विरंचेः।
विघूर्णिताक्षोऽजनि साध्वशक्तो भवत्प्रकोपेषु सलज्जमार्यः।।

–शनि0 13, 15, 16

कविसहस्रनामशतकम् तथा **ऋषिसहस्रनामशतकम्** अद्भुत कृतियाँ हैं। इन सहस्रनामों में कवि अथवा ऋषि के सहस्र पर्यायों का संकलन नहीं है, प्रत्युत कवियों तथा ऋषियों की सहस्र संख्या का नाम्ना उल्लेख है।

कविसहस्रनाम की विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत के कवियों की नामावली कालक्रमानुसार प्रस्तुत की गई है। इसमें प्राचीन तथा नवीन – सभी कवि सम्मिलित हैं। कवि–सम्बद्ध टिप्पणी में उसकी रचना का भी उल्लेख किया गया है। यह शतक मात्र पन्द्रह मिनट के पाठ में पाठक को प्रायः ढाई हजार वर्ष की सारस्वती यात्रा करा देता है। नये युग के कवियों की नामावालि द्रष्टव्य है–

हरीरामकलानाथराधावल्लभमाधवाः।
विन्ध्येश्वरीरमाकान्तमणिप्रणवकेशवाः।
सुभाषो हरिदत्तश्च प्रभुनाथप्रशस्यकौ।
शिवजी रूद्रदेवश्च दुर्गादत्तोऽथ केशवः।।
सप्तोत्तरमिदं कृत्वा कविनाम्नां सहस्रकम्।
मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रो विश्राम्यति मुदाऽधुना।।

ऋषिसहस्रनाम भी कम आश्चर्यजनक नहीं। इतने ऋषियों के नामोच्चारण मात्रसे तन–मन पवित्र हो जाता है। कवि ने सारे नाम वेदों, आर्षकाव्यों (रामायण–महाभारत) तथा अन्य पौराणिक स्रोतों से निकाले हैं। एक छन्द द्रष्टव्य हैं–

मरीचिर्नारदश्शुक्रः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः।
अंगिरा भृगुरत्रिश्च दधीचिश्च्यवनस्त्रितः।।–पद्य–4

अब पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित शतकों का परिचय दिया जा रहा है। इनमें प्रथम है– **दोधकशतक**। इस शतक के कुछ दोधक **वसन्तदोधकानि** शीर्षक से दूर्वापत्रिका (अंक) में प्रकाशित हुए। दोधक को कवि ने हिन्दी दोहा से समीकृत किया है। **यद्यपि संस्कृत के दोधक छन्द तथा हिन्दी के दोहे में मौलिक अन्तर है।**

कवि ने हिन्दी दोहे के आधार पर संस्कृत दोधकों की रचना की है। यह शतक कवि की आगामी काव्यकृति **सप्तवेणी** में संकलित है जिसका प्रकाशन राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, नई दिल्ली द्वारा किया जा रहा है। कवि–प्रणीत ये संस्कृत के दोहे विविधविषयक तो हैं ही, रसमय निर्झर भी हैं। उदाहरणार्थ–

रसिको नवश्छविल्ल इव किंशुकतरुर्विभाति।।
प्राचीपवनझरी न किं शठनायिकेव भाति!!
शीतलपवनझरी कथं शनैः कदुष्णा भाति!
ज्ञातं साम्प्रतमेधते ग्रीष्मो मधुरपयाति।।
हरितश्शुकोऽसितः पिको वनं वर्णशतगामि।
आयाते नु वसन्तके रक्ताऽहं प्रभवामि।।

श्रीशतक श्री नामक एकाक्षर दीर्घ छन्द में प्राणीत शतक है। वस्तुतः वार्णिक छन्दों का प्रारम्भ ही श्रीछन्द से होता है।

विद्युन्माला छन्द के प्रत्येक चरण में आठ गुरु अक्षर होते हैं। सहृदयजन अनुभव कर सकते हैं कि इस छन्द में पद्य–रचना कितनी कठिन होगी? परन्तु महाकवि अभिराज ने इस असम्भव को भी सम्भव कर दिखाया है **विद्युन्मालाशतकम्** के प्रणयन से। इस शतक में कवि ने स्नेह–प्रेम तथा दाम्पत्य–रस की व्याख्या की है। यह शतक **संस्कृतश्रीः** पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।[1]

हरगौरीगंगाशतकम् में आनन्दकानन काशी के अतीत एवं वर्तमान का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वर्णन गीतपद्धति में किया गया है। भगवान् शिव के शूलाग्र पर टिकी, त्रिलोक से न्यारी काशी विश्व की प्राचीनतम पुरी है। नाना धर्मों, सम्प्रदायों, जातियों तथा कुलों के लोगों ने मुक्तिकामना से काशी की सेवा की। कवि उस महत्त्व को रेखांकित करता है–

यत्र कपालमोचनं तीर्थं सन्तनुते निःश्रेयससौख्यम्।
धृतमरणोत्तरविमलविधानं जय हरगौरि! जननि जय गंगे!!
निगमवन्दिताऽप्यागममहिता विततपुराणकथानुकीर्तिता।।
काशी सौगतार्हतोच्छ्वसिता जय हरगौरि जननि जय गंगे।।

–हरगौरी, 7, 13

शिवभारतशतकम् का भी प्रकाशन **संस्कृतश्रीः** पत्रिका (दिसम्बर, फरवरी 2017) में हुआ है। इसमें कवि ने विश्वव्याप्त शिवतीर्थों का काव्यमय वर्णन किया है। भारत के ज्योतिर्लिंगों तथा अन्यान्य ज्ञात–अज्ञात शिवपीठों का अद्भुत वर्णन इस शतक से प्राप्त होता है। कवि ने वृहत्तर भारत के भूखण्डों में भी अवस्थित शिवतीर्थों का परिचय दिया है जो अत्यन्त ज्ञानवर्धक है।

नन्वेतेन सुवृत्तेनाऽसांगोपांगेन भारतम्।
आलोक्यते शम्भुमयं शाम्भवं सकलं जगत्।।
सद्यस्तोषकरश्शम्भुः क्षणेनैव विपद्धरः।
दीनबन्धुः कृपासिन्धुः परदुःखैककातरः।।
ततश्शरण्यमेकं तं मत्वा लोकस्तदर्चकः।
श्रद्धया परया प्रीत्या निष्ठया हि तमर्चति।।

–शिव0 95–97

बालीविलासशतकम् के प्रायः 40 पद्यों का प्रकाशन दूर्वा पत्रिका में (नवम्बर 1988) हुआ है। यह शतक बालीद्वीप की विविध रमणीयता को प्रकट करता है। कुछ पद्यों से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। द्रष्टव्य–

इन्द्राय नन्दनवनं धनदाय रम्यं वैभ्राजकाननमसौ परिकल्प्य वेधाः।

---

[1] प्राणेच्छामूलं त्वं बाले! स्वान्ते त्वं शान्तिस्त्वं सिद्धिः।
हार्षीकी त्वं तृप्तिर्नूनं लोके मुक्तिस्सा काऽप्यूर्ध्वा।।
त्वन्नेत्राब्धौ यो नो मग्नः भोगाकाङ्क्षानौकारूढः।
कैवर्तोऽसौ मोधोजातः मोघः स्वापे मोघो बोधे।।
रम्भाऽसित्वं सिन्धून्मन्थादुत्तीर्णा श्रीरैन्द्री रम्या।
लोके लोकस्वान्तेऽनन्तान् संकल्पान्निर्मान्ती नारी।।

यन्निर्ममे भुवि भुवं कुतुकौघकेन्द्रं ख्यातं तदेव खलु सम्प्रति बालिनाम्ना।।
बाला न सा वरतनुर्न च सुन्दरी या नो सुन्दरी न खलु पार्वणचन्द्रवक्त्रा।
चन्द्राननाऽपि न च सा न च या मृगाक्षी नासौ न या रूचिरबिम्बफलाधरोष्ठी।।

अभिराजशतकम् में महाकवि अभिराजराजेन्द्र का व्यक्तिगत जीवन प्रतिबिम्बित है। यह शतक अभी तक अप्रकाशित है। परन्तु इसे पढ़कर कवि के जीवन की तीती–मीठी अनुभूतियाँ समझ में आ जाती हैं। कुछ पद्य उद्धृत हैं–

नानन्दो न च वैभवं न च सुखं बाल्येऽनुभूतम्मया
प्रौढप्रीतिपुरस्सरं रतिपतेर्नारात्रिकं यौवने।
आधिर्बन्धुजनप्रणीतपरिधिर्दशोदधिः केवलं
मूकीभूय ललाटलेखमुररीकृत्यैव सोढो मया।।
चित्ताब्धिर्मथितस्सुखामरगणैः सम्भूय दुःखासुरैः
आयुर्वासुकिभाग्यमन्दरगिरिद्वैतोर्जितैः सश्रमम्।
यत्तेनोच्छ्वसितं विषं यदमृतं यद्वापि रत्नान्तरं
तत्सर्वं मयकाऽभिराजकविना प्रस्तूयते निर्भरम्।।

–अभि0 3, 104

स्पेनयात्राशतकम् कवि की नवीनतम रचना हैं। विगत अक्टूबर मास में कवि ने 18 से 21 दिनांकों में स्पेन देश के तीन विश्वविद्यालयों में व्याख्यान प्रस्तुत किये– वोल्लाडोहीड, मैड्रिड, लागुना विश्वविद्यालय तथा भारतीय संस्कृति केन्द्र में। इस यात्रा का रोचक वर्णन इस शतक में किया गया है। कवि अपना अनुभव बताता है–

श्रुत्वा मदीयव्याख्यानं स्फीतगीतं चसस्वरम्।
व्यामुग्धाः स्पेनबटवो मुखैर्हग्भ्यांच नन्दिताः।।
अभासन्त समे हन्त देववाणीविशारदाः।
सरसत्वं द्युसद्वाण्याः किन्तु तत्रस्ति कारणम्।।

चौरशतकम् विल्हण–प्रणीत चौरपंचाशिका का प्रवर्तन करने वाली, कवि के जीवन से जुड़ी एक विलक्षण कृति है। परन्तु दुर्भाग्य से यह काव्य अब उपलब्ध नहीं है।

अधमाधमशतक में भी कवि के किसी अकारण–वैरी का चरित्र–चित्रण है, जो पाठकों के लिये भद्रंकर नहीं है। यह शतक संभवतः कभी प्रकाशित भी नहीं होगा।

प्रो0 मिश्र कब, कौन नया शतक लिख देंगे, यह कहना कठिन है। यदि कोई लेखनी लेकर लिखता जाय तो सम्भवतः वह अपना वार्तालाप भी शतक में ही प्रस्तुत कर सकते हैं। माँ–वीणापाणि की असीम अनुकम्पा है। महाकवि के ऊपर।